मासिक—

मानव मन्दिर

सम्पादक :

एम० आर० भक्त
पी० एस० ई० (रीटायर्ड)

वर्ष 8	बृहस्पतिवार 10 दिसम्बर 1981	संख्या 8

हजूर परम दयाल जी महाराज का अन्तिम सत्संग पिट्सबर्ग मर्सी अस्पताल कमरा नं: 1705, अमेरिका।

दिनांक 8-8-1981

वह महापुरुष जो अनामीधाम तक पहुंचे अपनी बीमारी को दूर नहीं कर सके। यह एक प्रश्न है। बड़े-बड़े सन्त दुःखदाई मौत मरे, बाबा सावन सिंह जी महाराज ने मरते समय बहुत कष्ट उठाये, राधास्वामी दयाल अन्तिम दो वर्ष सख्त बीमार रहे, कबीर साहिब अन्तिम दस वर्ष बहुत पीड़ित रहे, सन्त तुलसीदास जी जिन्होंने रामचरितमानस लिखा और कहा कि :—

चित्रकूट के घाट पर, भई, सन्तन की भीर,
तुलसीदास चन्दन घिसे, तिलक देत रघुवीर।

अब लोग पढ़ कर हैरान होंगे कि सन्त तुलसीदास जी ने राम को तिलक लगाया। हालांकि वह तिलक वास्तविक राम को नहीं लगाया बल्कि अपने ही बनाये हुए मन के राम को लगाया। लेकिन उसने आयु के अन्तिम तीन वर्षों में वो शारीरिक कष्ट उठाया जिसे सुन कर मन कांपता है। मेरे अपने सत्तगुरु जी ने धाम बनाई और वह उजड़ गई। हालांकि मैंने पहले ही कह दिया था कि दाता! आपकी धाम उजड़ जायेगी। वह पहुंचे हुए महापुरुष थे तथा बड़ी भारी हस्ती थे तो वह अपनी धाम को उजड़ने से क्यों नहीं बचा सके? मुझे मेरे सत्तगुरु ने आज्ञा दी थी कि इस भौतिक शरीर को छोड़ने से पहले सन्तमत की शिक्षा को बदल जाना। जब मैं देखता हूं कि इतने-इतने महान् सन्तों ने बहुत कष्ट उठाये। जेसस् क्राईस्ट ने अति दुःख पाया। गुरु नानक देव जी महाराज के दो लड़के उनके आज्ञाकारी न रहें,

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

उनकी अपनी धर्मपत्नी से अनबन रही। अत: यदि वह महान् सन्त थे तो अपने बच्चों को क्यों न ठीक कर सके? यह एक बड़ा गम्भीर प्रश्न है जो मेरे मन में आता है। जितने भी महापुरुष हुए हैं इन्होंने बढ़ा-चढ़ा कर बातें कीं। सुखमणि साहिब में गुरु अर्जुन देव जी ने लिखा है 'प्रभ सुमिरन से दुश्मन टरे' और उनके भाई ने उनके साथ इतनी शत्रुता की। अत: उन्होंने जो कुछ लिखा क्या सब ग़लत नहीं? हम सोचने के लिए विवश हैं कि हम क्या करें? मैं दुनिया को यह बताने के लिए आया हूं कि सृष्टि को बनाने वाला निर्दयी है। यह मेरी Research है कि सृष्टिकर्त्ता ज़ालिम है। एक कीड़ा दूसरे कीड़े को खाता है, एक देश दूसरे देश के साथ युद्ध करता है जिससे अनगिनत इन्सान मर जाते हैं। अब उन्होंने एटम बम्ब बना लिया और अपने आप को सभ्य कह रहे हैं। यह सबसे बड़ा प्रश्न है क्योंकि निर्दयी ईश्वर ने हमें अपने जैसा निर्दयी बनाया है। अब हम अपनी कामपूर्ति के लिए या अपने स्वार्थ के लिए व अपने आराम के लिए सन्तान पैदा करते हैं या नहीं! क्या पता

बच्चे के साथ क्या होगा ? क्या पता वह टी. बी. से मरेगा या कैंसर से मरेगा ? अतः क्या वह ज़ालिम नहीं ? वह ज़ालिम है। अतः इसका इलाज़ क्या है ? केवल एक इलाज़ है कि शरीर और मन के चक्कर से निकल जाओ। बस ! कोई भी हो,चाहे वह अवतार हो, राम हो, कृष्ण हो, जो भी इस शरीर व मन में होगा, उसको कष्ट अवश्य होगा अर्थात् वह दुःखों से बच नहीं सकता। इसमें कोई परिवर्तन नहीं कर सकता। यह मेरा अनुभव है। मैं आपको अपना अनुभव बता रहा हूं कि आप धर्म के प्रोफैसर हैं। मैं चाहता हूं कि अगर कोई व्यक्ति मेरे इस अनुभव पर आपत्ति उठाये वह ग़लत प्रमाणित कर सकता है। हमारे बच्चा पैदा होता है, कितनी खुशियां मनाते हैं। बच्चा रो रहा है उसको दर्द है। यह मां-बाप खुशी मना रहे हैं और बच्चा रो रहा है तो क्या वह पापी नहीं हैं ? तो सन्तों ने आकर क्या कहा। वो केवल ऐसे व्यक्तियों के लिए आते हैं जिनको यह विश्वास हो गया है कि यह संसार दुःखों का घर है और जो इस दुनिया से दूर जाना चाहते हैं। यह सन्तमत सब के लिए नहीं है।

मैंने कभी इतना कष्ट नहीं उठाया, जितना अब उठाया है। मैं अपने आप को पूछने के लिए विवश हूं कि मैंने कौन सी ग़लती की है। अगर मैंने कोई पाप नहीं किया तो ईश्वर ज़ालिम है। इस लिए मैंने कहा है कि ऐ इन्सान! ईश्वर को मत याद कर बल्कि अपनी नीयत को साफ रख, अपने स्वार्थ के लिए किसी से हेरा-फेरी मत कर, यह है जो मैंने निष्कर्ष निकाला है। मैं चाहता हूं कि दुनिया के बड़े-२ सुधारक मुझे बतायें। Law of Radiation काम करता है। यदि मेरी Radiation आपको मिलती है, जब आप मेरे सम्पर्क में आयेंगे क्या मुझे आपकी Radiation नहीं मिलेगी ? अवश्य। मैं विशेषत: यह बात मानव दयाल शर्मा को बता रहा हूं। यदि मेरी Radiation से दूसरों को लाभ पहुंचता है, दूसरे व्यक्ति मेरे पास आते हैं तथा मेरे पांव छूते हैं तो क्या उनकी Radiation मुझे नहीं आयेगी ? आप मेरी बातें को समझ गये, कि मैंने आपको क्या कहा ? यह Law of Radiation है। मैं सोचता हूं कि मैं क्या करूं। मैं आप में से किसी के साथ भी प्रेम नहीं करता। मैं स्वार्थ के लिए न अपने लड़के से, न

आपमें से किसी के साथ प्रेम करता हूं। मैं तुम्हारे प्रेम का उत्तर प्रेम से देता हूं, बिना किसी स्वार्थ भावना के। यह तरीका है जिससे हम बच सकते हैं। रजनीश ! यह बहुत अच्छा व्यक्ति है। यह अमीरों के सम्पर्क में आ गया, इसने अपना Bussiness बना लिया। मैंने कहा यह गिरेगा और यह गिर गया। गुरु अमीरों से प्यार करते हैं। और वह जो बड़े-बड़े अमीर हैं वह आश्रम के प्रधान और सैक्रेटरी बन जाते हैं। मैं आपको सच्चाई बता रहा हूं। मैं आपके देश की बावत नहीं बल्कि भारतीयों के विषय में कह रहा हूं। हेजो रा-फेरी करने वाले हैं वे आश्रमों के President व Secretary बन जाते हैं। मैंने Radiation से बचने के लिए क्या उपाय किया ? मैं किसी से प्यार नहीं करता। किसी से भी अपने स्वार्थ के लिए प्रेम न करो। शर्मा ! अगर तुम ने मान, प्रतिष्ठा, प्रशंसा कमा ली तो वह क्या काम आयेगी, क्या तुम्हारे साथ जायेगी ? तेरे साथ तेरे कर्म जायेंगे। अपना जन्म बनाओ इन्सानी चोला बार बार नहीं मिलता। कौन पुत्र है, कौन स्त्री है, कौन पता है ? मैं यह शब्द क्यों कहता हूं ? तुमने मुझे

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

अपना गुरु माना और मेरा यह कर्त्तव्य था कि मैं आपको सच्चाई बताता। मेरा यह कर्त्तव्य नहीं था कि मैं यह कहूं सत्संगियों से पैसा इक्ट्ठा कर के मेरे मन्दिर को दो, यह कर दो, वह कर दो। मेरा कर्त्तव्य है कि मैं गुरु का काम करूँ, ताकि तुम्हारी अज्ञानता दूर हो और तुम्हें शान्ति मिले। बस! मेरे पास कई अमीरों से अमीर फिरते हैं मैं परवाह नहीं करता। मैं उनके प्रेम का उत्तर प्रेम से देता हूं। मेरे पर प्रभाव होता था। मेरे पास सत्संगी आते थे और उनकी Rediation मुझ पर प्रभावित होती थी और मैं सोचा करता था कि ऐसा क्यों है? फिर मैंने उसका ईलाज़ यह सोचा! ज़ाती ग़रज के लिए किसी से प्यार नहीं करना। अपने कर्त्तव्य का पालन करो। अपनी ज़ाती गरज़ के लिए नहीं वल्कि केवल कर्त्तव्य के रूप में। आप अपने बच्चे से प्यार करते हैं, मोह के आधीन होकर न करें केवल प्यार करें। यह निष्काम कर्त्तव्य है। इससे बचने का केवल एक ही रास्ता है। यह कुंजी है। आगे कभी किसी से प्रेम किया करता था, अब नहीं। मानव दयाल जी ने कहा--अब

तो आप अढाई घण्टे तक ऊपर समाधि में रहे। हां ! जहां रहा, अढाई नहीं साढ़े तीन घण्टे। शर्मा जी आगे तो आप कहते थे कि दो मिनट ठहरता हूं लेकिन अब ज्यादा देर ठहरे। महाराज जी—आगे मैं एक मिनट भी नहीं ठहर सकता था। मानव दयाल शर्मा जी इसके कारण आपका तेज बहुत बढ़ गया है और वह तेज हमें मिल रहा हैं। मेरे मिलने वाले जितने हैं सबसे पहले मैं चाहता हूं कि उनको मिले अर्थात् सेहत धन तथा मन की शान्ति मिले। यह केवल कल्पना है।

उत्त ते कोई न आया जा से पूछूं जाय,
इत ते सब कोई जात हैं भार लदाय लदाय।

इस का अर्थ यह है। ये दो बातें आपको कहनी थीं, अच्छा किया। यह मेरा मतलव नहीं है कि स्त्री है, पुत्र हैं, परिवार रहे सब रहें। सब से प्यार करो लेकिन अपनी ज़ाती ग़रज के लिए नहीं। इससे कोई पाप नहीं। कर्त्तव्य का पालन करो। अगर हम स्वार्थ के लिए काम करते हैं तो वह

संस्कार पड़ जाते हैं। मुझे आज मन्दिर बनाये हुए 20 वर्ष हो गये। कभी मन्दिर स्वप्न में नहीं आया। कई सत्संगी हैं दुर्गादास, गोपाल दास, मुन्शीराम कभी कोई स्वप्न में नहीं आया। कभी कोई नहीं आया। मगर रेलगाड़ी, तार, माँ, बहन, बीबी कभी-कभी छोटा भाई रायसाहिब ये आज दिन तक मेरा पीछा नहीं छोड़ते। क्यों? मैं अपने आप से पूछता हूं कि आप तो मन में नहीं आते यह क्यों आते हैं? क्योंकि मैंने उनके साथ अपनी जाती गरज के लिए प्रेम किया। जितना झगड़ा है सब निजी आसक्ति का है और कुछ नहीं। मैं हैरान होता हूं, आप सोचिए मेरी बात को कि कभी आप नहीं आये, मुन्शीराम नहीं आया, जौड़ा नहीं आया, मगर बीबी और बाप, Staff जिन के साथ मैंने काम किया, रेलगाडी ईत्यादि। पास मिला हुआ है। अमुक जगह तबदीली हो गई है, सामान लदा हुआ है, अब मैं वसरे वगदाद में काम करता हूं। हैरान होता हूं कि ये मेरा पीछा नहीं छोड़ते। मैं नहीं जानता। मैंने यह समझा कि मैंने कुछ नहीं सीखा। मैं कुछ नहीं जानता। यह मेरा अपना ही अहंकार था जो मैं यह समझता था

कि यह मैंने समझा है कि मैं मह हूं, मैं धाम जाऊंगा, मैं बहुत कुछ करूंगा। शर्मा जी—अब तो आप पहुंच गये हैं। महाराज जी—हां, पहले संघर्ष करना पड़ता है। मानव दयाल जी—पिता जी! यहां नर्सी, हस्पताल में सभी सेवा करते हैं, यहां आपको आराम तथा एकान्त मिल गया, इस लिए आप वहां ठहरे। महाराज जी मैंने समझा है कि ये विदेशी भारतीयों से शतप्रतिशत अच्छे हैं, मैं साफ बात कर रहा हूं। हम लोग Corrupt हेरा-फेरी, मन में कुछ और होता है तथा बातें कुछ और करते हैं। पांचों उंगलियां बराबर नहीं होतीं। अमेरिका में भी हेरा-फेरी करने वाले होंगे मगर अधिकतर लोग Sincere ईमानदार हैं। और ये Arthodox अन्धविश्वासी नहीं हैं। इनको यकीन दिला दो और यह मान जाते हैं। मैं कुछ किताबें लाया हूं, आप इन्हें बांट दें। मैं ब्राह्मण हूं। ब्राह्मण के लिए ज्ञान बेचना पाप है। इन किताबों में जो कुछ लिखा है वह मेरा निजी अनुभव है। मैं आजाद ख्याल वाला व्यक्ति हूं। महाराज जी—जाने कहां है? शर्मा जी—मैं उन को बोल दूंगा। महाराज जी—हां, वह मुझे आकर मिल जाये। यहां

का सारा खर्च डा॰ रामदेव राव तथा विश्वामित्र उठा रहे हैं। वह अमीर व्यक्ति है। वह भी इस खर्च में अपना भाग डाले। इतने में श्री विश्वामित्र जी की तार आ गई जो इस प्रकार है :—

His full faith in Him. I (विश्वामित्र) take all your Physical Suffering like Babar humbly on thought, not to take birth again like either form. your's in Him.

मानव दयाल जी—मैंने खोजा है कि आप आनन्द ऋषि थे। महाराज जी—इस बात का मेरे पास प्रमाण नहीं, मैं यह नहीं कहता। यह दुनिया तर्क-वितर्क करती है। यह दुनिया अज्ञानी है, मैंने जितना काम किया है मैंने कोई बात ऐसी नहीं की जिसका मेरे पास प्रमाण नहीं था। हां! यह हम मानते हैं कि हम पिछले जन्मों के कर्मों के कारण एक दूसरे से सम्बन्धित हैं, अब यह राजेश्वर राव हैं। इनका कोई पिछले जन्म का सम्बन्ध होगा। मेरा छोटा भाई था वह इनके पास रहा। अब मेरी पोती रानो के यह संरक्षक हैं। अब मैं

यहां आया यह कितनी सेवा करते हैं। हम सब पिछले जन्मों के कर्मों के कारण सम्बन्धित हैं।

मानव दयाल शर्मा जी—मुझे जब आपका स्वप्न आया था तो मैंने आपको देखा भी नहीं था। अब आप समाधि में तो आते हैं लेकिन स्वप्न में नहीं आते। महाराज जी—एक समय आ जायेगा जब यह मैं, तू का झगड़ा भी समाप्त हो जायेगा। अभी तुम्हारा समय नहीं आया, फिर भी तुमने बहुत काम करना है।

शर्मा जी— यहां के डाक्टर बीमार को पिछले जन्म में ले जाते हैं तथा जब उनको पिछला जन्म याद आता है तो वह स्वस्थ हो जाते हैं। जैसे किसी को पेट का दर्द हो रहा था तो डाक्टर उसको पिछले जन्म में ले गया। उसको पिछले जन्म में आया कि लगभग 400 वर्ष पहले जब धर्मों की लड़ाई हुई थी तो उसको सूली पर चढ़ाया गया था, उसके पेट में वह नेजा घुमा रहे थे तो जब वह वापिस आया तो उसको डाक्टर ने कहा कि यह तुमको पिछले जन्म का ध्यान आ रहा है, उसका कष्ट दूर हो गया। इस

तरह डाक्टर पिछले जन्म में ले जाकर इलाज कर रहे हैं। महाराज—हो सकता है। आप Prostrate glands का operation कब करोगे ? डा० राव ने कहा—सोमवार को, एक सप्ताह बाद।

नोट :—यह सत्संग हजूर ने धर्म के प्राध्यापक श्री रोजर्स हार्वर्ड (अमेरिका) को दिया।

हजूर मानव दयाल ईश्वरचन्द्र शर्मा जी महाराज की ओर से दो शब्द ।

जब मैं अकेला होता हूं मैं अपनी आत्मा को साफ रखता हूं। कई बार कई प्रकार की इच्छाएं पैदा होती हैं। मेरी यह आदत मुझे ऊपर लाई। मैं अपनी ज़ाती गरज़ के लिए या मान, प्रतिष्ठा के प्रशंसा के लिए कोई इच्छा नहीं करता। पुस्तकों में कई बातें लिखी हुई हैं :—

गुरु चरण गहो, गुरु चरण गहो,
गुरु चरण गहो, तुम तर जाओगे।

जब मैं पूछता हूं कि क्या गुरु के चरणों को धो कर पीने से तुम तर जाओगे ? गुरु के चरण हैं प्रकाश (Light) प्रकाश को पकड़ो, फिर तुम तर सकते हो। यह है सच्चाई। अगर पैसे देने से कोई तर जाता

वो ये धनी लोग तर जाते। फिर श्री I. C. Sharma से कहा कि स्वार्थी नहीं बनना, काम करो। एक समय आ जायेगा।

माला फेरूं न हर भजूं, मुख से कहूं न राम,
मेरा राम मुझ को भजे, तब पाऊं विश्राम।

यह मेरा हाल है। अपने अनुभव से आप लाभ उठायें, बस। मानव दयाल जी यह हो रहा है।

राधास्वामी !

मेरे परम प्रिय सुनने वालो ! यह रिकार्ड, पिता जी की वाणी व उनके शब्द आपने सुने हैं, यह उनके आपरेशन होने से पहले 8 अगस्त शनिवार को रिकार्ड किया गया। मैं जानता हूं कि आपके मन में क्या हो रहा है। आंसू बहाना अनुचित नहीं है किन्तु पिता जी ने हमें पिछले कम से कम एक वर्ष से निरन्तर अपने शब्दों में, अपने हर एक भाषण में, अपने पत्रों में बार-2 यह बताया है कि उनका

यहां पर जो शारीरिक रूप में रहने ५
था वह समाप्त हो गया। जो आपने सु
पिता जी के अपने इन वाक्यों में जो आपको ए
प्रकार की कसक दिखाई देती है वह कसक, वह पीड़
मानसिक पीड़ा है इस लिए नहीं कही कि उनको कष्ट
हो रहा था। मैं बहुत सौभाग्यशाली हूं कि उसी रात
को जब यह रिकार्ड किया गया उसके उसी दूसरी रात
को अर्थात् रविवार को यहां रहा। वह शब्द जो
उन्होंने कहे हैं वह मैं किसी समय आपके सामने
रखूंगा। किन्तु मैं यह बता देना चाहता हूं कि डा०
रामदेव राव जी ने मुझे बताया कि यह जो उनको पीड़ा
थी यह शारीरिक नहीं थी। उनका यह कहना है कि
यह पीड़ा उन्होंने सारे विश्व में इस समय जो इतना
अन्धकार फैला हुआ है, इस अन्धकार में सम्भावना है कि
विश्व के अन्तर कोई ऐसी गड़बड़ हो जाये जिसमें लाखों,
करोड़ों व्यक्तियों का नाश हो जाये, इस पीड़ा से पीडित
होकर सारे कष्ट को अपने ऊपर सहन करते हुए गये
और विश्व कल्याण के लिए हमें यह बताया है। आपने
देखा होगा, आप सुनेंगे, आप ने कहा है कि मेरी
Radiation का प्रभाव आपके विचारों पर पड़ता

है तो क्या आपके विचारों का प्रभाव मेरे पर नहीं पड़ता ! यह समझने की बात है। राधास्वामी परम दयाल, परम सन्त जो इस समय शारीरिक सीमा से बाहर हो कर प्रत्येक शरीर के अन्तर दाखिल हो गये हैं। अब उनके अनेक शरीर हैं उनकी कृपा से, उनके अनुग्रह से, उनकी दया से हमें निस्सन्देह ऐसी प्रेरणा मिलेगी कि हम सच्चे बनेंगे। कथनी व करनी जो अन्त में उन्होंने कहा है, खेद है कि लोगों की कथनी व करनी में अन्तर है। एक नहीं। इस महान् दुःख को सहन करते हुए निरन्तर चेष्टा करें और करेंगे, रुक नहीं सकते। उनकी इच्छा परम तत्त्व में मिलकर उनकी जो शक्ति है वह स्वयं ही हमें इस मार्ग पर चलायेगी। मैं अधिक समय नहीं लेना चाहता। जिस रात को मैं उनके साथ रहा वह जो अनुभव है वह वर्णन से बाहर है। उन्होंने मुझे जो आदेश दिया है उसके अनुसार मैं आपके समक्ष सच्चे हृदय से यह प्रतिज्ञा करता हूं कि जीवन तो मैंने इसके लिए दे ही दिया है तथा देना चाहिए यह आपके लिए नहीं बल्कि अपने लिए किन्तु मैं परमप्रिय आदरणीय भाई भगत जी

से प्रार्थना करता हूं कि जो हमारे बुजुर्ग पिता जी के संमत उनके गुरुभाई आनन्द राव जी हैं तथा पीरे मुगां साहिब हैं उनसे हमें प्रेरणा लेनी है। वह सब उनका रूप (तद्‌रूप) हैं, मुझे यह लगता है कि हमारा झुकाव तो उस अद्‌भुत अचरज रूप से था और वह रूप परम तत्त्व का है। जो सौन्दर्य उनके शरीर में आज देख रहे हैं यह ऐसा सुन्दर शरीर मैंने नहीं देखा। तो मैं इतना निवेदन करना चाहता हूं कि हम सब अपने भावों को व्यक्त करते हुए, निरन्तर उनका स्मरण करते हुए, उनके जीवन को देखते हुए उनके सीधे व सच्चे मार्ग पर चलें। यह कुछ भाव स्वत: ही इन शब्दों में मेरे द्वारा व्यक्त हुए हैं।

राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी।
अलख अगम अनामी,
राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी।
परम सन्त का रूप धरा, जीवों पर उपकार किया,
सीधा सच्चा मार्ग दिया, आये धुर पद धामी।
राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी।

राम भी हो और कृष्ण भी तुम तुम महावीर और वुद्ध गौतम।
तुम हो क्राईस्ट और बुद्ध गौतम, अक्षर ब्रह्म और पुरुषोत्तम।

सब में हूं मैं अनामी,
राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी ।

बन कर आये परम फ़कीर, हर ली सब जीवों की पीर ।
महावीर और दानी वीर, नाम दान के दानी ।
राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी ।

परम सन्त का रूप धरा, जीवों पर उपकार किया ।
सीधा सच्चा मार्ग दिया, आये धुर पद धामी ।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ।

मैं पिता जी की आज्ञानुसार यहां पर देश में उस उद्देश्य के लिए जो उन्होंने कहा है कि उनके उद्देश्य का काम करो । कुछ समय के लिए जब तक कि यहां पर मैं कुछ संस्था के रूप में, सत्संगियों के परस्पर संगठन के रूप में काम कर रहा हूं । किन्तु दो वर्ष, अधिक से अधिक तीन वर्ष के उपरान्त पूर्णतया रिटायरमेंट पर जाना है, उनका कहना था कि अपनी रिटायरमेंट ले कर जाओ । मैं यह आप से निवेदन करता हूं पिता जी की जो आज्ञा । पिता जी ने कहा है :—

जिधर देखता हूं उधर तू ही तू है ।
हर शय में जलवा तेरा हूब-हू है ।

वही नर जहां में सुखी है निरन्तर,
कि दिन रात जिसको तेरी ज़ुस्तजू है।
तू है सब का स्वामी, तू है सब का दाता,
जो हो जाय तेरा उसी का ही तू है।
जो सब को तुम्हीं में तुम्हें सब में देखे,
हो जाय तेरा उसी का ही तू है।
वह आशना है तेरा और माशूक है तेरा।

परम प्रिय पिता जी को हमने समझा नहीं। उनकी पूरी पूर्णता की समझ तो उनकी कृपा से ही आयेगी किन्तु मैं यह आपसे प्रण कर रहा हूं, अभी मैं दिसम्बर में कुछ सत्संगियों को लेकर आऊंगा। व्यास पूर्णिमा पर पिता जी की आज्ञा से आने का बिचार है। मैं प्रत्येक मास पिता जी के विचारों को निरन्तर लिख कर के परम पूज्य भगत जी के चरणों में देता रहूंगा ताकि मानवता मन्दिर को ज्योति निरन्तर जलती रहे। उनके विचारों की धारा चलती रहे। मुझे आशा है कि आप सब सत्संगी भाई, वहिनें, इस महान् आपत्ति को सहन करेंगे। आप से प्रार्थना करता हूं कि सहन करें। इससे अधिक इस समय कहा नहीं जाता। फिर भी जब तक कि मैं इस देश में अर्थात् अमेरिका में, तीन वर्ष तक रहूंगा। मैं आकर के काफी समय के लिए आपकी सेवा करता

रहूंगा। अब उसके पश्चात् भी जो उनकी मौज़ है उसके अनुसार यह काम चलेगा। न ही केवल एक देश में बल्कि यह उनकी आज्ञा है, अनेक पत्रों में उन्होंने लिखा है, आज्ञा दी है, मैं फिर आपसे प्रण करता हूं कि जीवन सेवा के लिए है, उनके लिए है। मैं पुनः आप से और परम प्रिय नन्द लाल जी से भी प्रार्थना करता हूं कि वह पूर्ण श्रद्धा के साथ इस काम को पूर्णतया सरंजाम देने के लिए मेरे साथ रहेंगे, मैं उनके साथ रहूंगा और जो भी इस प्रकार की सेवा लिखने में, पढ़ने में और पिता जी की आज्ञानुसार सत्संगियों को साथ लेकर चलना है ताकि उनका उद्देश्य या जिस उद्देश्य के लिए उन्होंने शरीर धारण किया है कि सभी जीवों को साथ लेकर जाना है। विश्व में शान्ति हो, लोगों को उनके घरों में, समाज में, गृहस्थ में शान्ति प्राप्त हो। बाकी बातें किसी और समय पर व्यक्त करूंगा। अब मैं इन शब्दों के साथ आपसे आज्ञा लेता हूं।

राधास्वामी।

परम दयाल फ़कीर सत्संग
मानवता मन्दिर, होशियारपुर।

दिनांक : 25-11-1979

खोज री पिया को निज घट में। टेक।

जो तुम पिया से मिलना चाहो, तो भटको मत मग में।
तीर्थ व्रत कर्म आचारा, ये अटकावें मग में॥
जब लग सत गुरु मिले न पूरे, पड़े रहोगे अघ में।
नाम सुधा रस कभी न पावो, भरमो योनी खग में॥
पंडित ज्ञानी काज़ी भेष शेख सब, अटक रहे डग-2 में।
इनके संग पिया नहीं मिलना, पिया मिले कोई साधु समग में॥
यह तो भूले विषय वास में, भरम बसे इनके रग-2 में।
बिना सतसंग कोई भेद न पावे, वो तोहे कहें अलग में॥
जब लग संत मिलें नहीं तुमको, खाय ठगोरी तू इन ठग में।
राधास्वामी शरन गहो तो, रलो ज्योति जगमग में॥

दुनिया ने सन्तमत को नहीं समझा। आप को क्या कहूं मैं खुद नहीं समझा था। आपको तो तब कहूं

जब मैंने समझा होता, मैंने तो बड़ी देर में अनुभव के बाद समझा। दया तो दाता दयाल जी की थी। उन्होंने ये काम मुझे इसीलिये दिया था कि मेरा भ्रम दूर हो जाये और मुझे होश आ जाये। कहा था सत्संग कराया करो और नाम दिया करो। गुरु सत्संगियों के रूप में तुझे मिलेगा, वो सन्तमत का राज़ तुझे बतायेगा। इस को करने से मैं मन का रूप समझ सका, तब मैं सच्चे पिया को खोज सका।

वो पिया कौन है जो हम को मिलेगा या मिलता है? मुझे पता नहीं कि स्वामी जी या दाता दयाल जी के पिया की क्या शक्ल थी। कभी मैं समझता था राम पिया है, तो मैं राजा दशरथ के लड़के की शक्ल को रोज अपने मन के अन्दर रखता था या कृष्ण को रखता था। मेरे ध्यान की इतनी शक्ति थी कि राम या कृष्ण हर समय मेरे साथ चलता रहता था। कई दफ़ा मैंने बांसुरी की आवाज़ भी सुनी, लेकिन बागां वाले स्टेशन पर एक घटना हुई। एक दिन मैं आ रहा था, तो आगे-आगे कृष्ण चल रहा था। कृष्ण जी की मूर्ति ने मुझे इशारा किया कि वो

कि यह गाय का गोबर पड़ा है इसे खा ले मैंने खा लिया। जब मैं स्टेशन पर आया तो दिल में सोचा किसी भगत माल में यह नही लिखा हुआ कि किसी को भगवान् ने कहा हो कि गोबर खा ले। मेरी समझ में आया कि ये कृष्ण नहीं है, फिर मैं रोने लगा, लगातार 24 घण्टे राम को मिलने के लिये रोंता रहा, क्योंकि मैं हिन्दू था, सुना हुआ था, मालिक अवतार लेता है।

नाना भांति राम औतारा, रामायण सत कोट अपारा।

रोता-रोता बेहोश हो कर सो गया। सवेरे 5 बजे एक दृश्य था, जिस में दाता दयाल महर्षि शिवब्रत लाल जी महाराज मेरे स्वप्न में आये। मैं इन के चरणों में गया। उन्होंने मुझे ये गुरुमत या सन्तमत दिया ! मैं उन को याद करता था और उनको अपना पिया समझता था। दुनिया में कितने ही सत्संगी हैं जो अपने-अपने गुरुओं को पिया यानि प्रीतम समझते हैं। मगर मुझे यह सिद्ध हुआ कि जो गुरु का रूप प्रकट होता है और किसी के काम भी कर जाता है यह पिया नहीं है। वो तो जिसने जहां

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

मान लिया उसके अपने ही मन के ख्याल का ख्याली पिया है। दूसरे आदमी जो मज़हब के टेकी हैं वो ऐसा कहने को बुरा मानते हैं मगर बात ये सच्ची है। जो मज़हब वाले यह मानते हैं कि कोई गुरु जा कर उन की सहायता करता है, मैं नहीं मानता। कैसे मानूं ? मेरे साथ गुज़रती है। मैं होशियारपुर में बैठा रहता हूं। लोग मुझे याद करते हैं, मेरा रूप जाता है, उनके काम कर जाता है और मुझे बिलकुल कोई पता नहीं होता। मैं सोचता हूं अगर ये बड़े-बड़े सन्त कुछ कर सकते होते तो उनके साथ क्या कुछ बीती अपने विरोधियों के मन के ख्यालात को बदल देते और अपने आप को बचा लेते, अपनी ही मुसीबतों को दूर कर लेते। भारतवर्ष में मैं पहला फ़कीर हूं जिस ने इस राज़ को खोला है। जो इस शब्द में कहा है :—

सन्त बिना कोई भेद न जाने, वो तोहे कहें अलग में।

जो अलग का रास्ता था वो मैंने काट दिया और बिलकुल सच्चाई की बात करता हूं। पिछले

ज़माने में ये भेद देने का दस्तूर नहीं था। सब सन्तों ने समयानुसार छिपाया और केवल अधिकारी को, जिसने कोई बात पूछी उसको अलग बैठा कर बता दिया। मगर अब इस बात की ज़रूरत महसूस हुई कि सच्चाई को आम फैला दिया जाये, क्यों कि दाता ने मेरे जिम्मे ये ड्यूटी लगाई थी कि चोला छोड़ने से पहले तालीम को बदल जाना। इस लिये मैंने जो अनुभव किया वो बताता हूं मगर ये कोई दावा नहीं करता कि मैं जो कुछ कहता हूं यही ठीक है। पिया क्या है? पिया एक सन्तुष्टि और शान्ति की अवस्था का नाम है। अपने ही मन के या अपने ही आप के अन्तर ठहर कर एक प्रकार की अवस्था पैदा होती है जिस को शान्ति कहते हैं, वो पिया है। पिया हमारे मन की या हमारे आप की वो हालत है जहां हम बिना किसी कारण के शान्त रह सकें। वो शान्ति जब मिलेगी तुम को तुम्हारे अन्तर में ही मिलेगी। अगर कोई व्यक्ति ये चाहे कि मैं धन संग्रह करके शान्ति प्राप्त कर लूं तो ये ग़लत है, ये हो नहीं सकता। वो एक अस्थाई ख्याल होता है। जैसे हम आज लड़के को देख कर खुश होते

कल को वही लड़का दस नम्बर का बदमाश हो जाता है। मेरे पास रोज़ केस आते हैं याLove Marriage करते हैं या पैसे को देख कर शादी करते हैं,पति-पत्नी की नहीं बनती। क्या कुछ हो रहा है ? ऐसे ही दुनिया में ये सब आरज़ो खुशी व शान्ति के उपाय हैं। यह असली शान्ति या पिया नहीं है। शब्द था :—

खोज री पिया को निज घट में,

अब हम अपने अन्तर में कैसे तलाश करें और क्या समझें ? पिया केवल वो हालत है जहां हमारा अपना Self ही रहता है। न वहां गुरु है, न चेला है, न राम है, न स्वामी है और न सेवक है। यही बात जेठ महीने में राधास्वामी दयाल ने कहीहै :—

जेठ महीना जेठा भारी, जीवन हिरदे तपन करारी।

और यही बात कबीर साहिब ने कही है। आद धाम में वो लिखते हैं:—

सखया वो घर सबसे न्यारा, जहां पूरण पुरुष हमारा।

आखिर में लिखते हैं :—

जहां पुरुष तहां कछु नहीं, कहें कबीर हम जाना,
हमारी सैना जो कोई बूझे, पावे पद निरवाना।

ये है पिया ! पिया जब मिलेगा, अपने घट में मिलेगा । कैसे मिलेगा ? किसी सच्चे कामिल इन्सान के सत्संग में बैठ कर उसकी बात को समझ कर, अपने अन्तर दाखिल हो कर जो रूप, रंग, रेखा तुम्हारे अन्तर पैदा होते हैं उनको छोड़ कर अपने आप में ठहर जाओ, मगर ये कठिन काम है । मैं सब कुछ जानता हूं मगर किसी समय में दो मिनट या एक मिनट के लिए इस अवस्था में जाता हूं । इस से ज्यादा ठहर नहीं सकता । जानता हूं मगर ठहरा नहीं जाता । क्यों नहीं ठहर सकता ? ये मेरे वश की बात नहीं है । इस वास्ते जिस आदमी को शान्ति की तलाश है उसके लिए गुरु के चरण हैं प्रकाश । बाहर के गुरु को ये ड्यूटी है कि जीव को समझा कर उसको अपने अन्दर शब्द और प्रकाश में लगा दे । ये है सन्तमत की जड़, निज नाम भी यही है कि अपने आप को पहचानो । अपने आप का ज्ञान होना ही नाम की प्राप्ति है । पिया का मिलना क्या है ? अपने घट में बैठ कर जो कुछ भी तुम्हारे अन्तर प्रकट होता है उसको देखो, प्रसन्नता लो मगर उस में फँसो मत । मैं आगे फंसता था अब नहीं फंसता । आगे दाता दयाल या राम का रूप प्रकट

होता बड़ी खुशी मनाता था, समझता था कि मैंने मैदान मार लिया। सन्तमत के समझने में दुनिया ने बड़ी ग़लती खाई है । मैंने बड़ी-बड़ी रोशनियां देखीं और बानें सुनी, क्या मैं फिर कामी और लोभी नहीं हुआ ? तो शब्द योग और अभ्यास जो है ये मञ्जिले मकसूद नहीं है। अभ्यास करने से तो केवल आदमी का मन सूक्ष्म हो जाता है और वो बात को समझाने के योग्य हो जाता है।

यह सन्तमत उन व्यक्तियों के लिये है जो मज़हबी दुनिया में आकर उस खुदा या परमेश्वर की तलाश करते हैं। इन मज़हबों, ख़ुदा और परमेश्वर की ग़लत समझ ने तो दुनिया को मार डाला ! देखते नहीं कितने झगड़े होते हैं और हज़ारों फिरके बन गये। हिन्दुओं मैं हज़ारों फिरके, मुसलमानों में 72 फिरके, इसीलिए कलियुग में सन्त प्रकट हुए कि सच्चाई ब्यान कर जावें कि ऐ इन्सान, शान्ति या मालिक जो कुछ भी है तेरे घट में है, बाहर नहीं है। अगर मक्का शरीफ़ में कोई खुदा रहता होता तो क्या यह झगड़ा होता जो वहां

हुआ। मज़हब आज के युग का एक पाखण्ड और धोखे का जाल है। अपने-अपने मतलब और बड़ाई के लिए सब काम करते हैं। सत्संग में जाकर सत्संग की बात को सुनना, समझना और विचार करना ही गुरु भक्ति है।

जो तुम पिया से मिलना चाहो, तो भटको सत मग में।
तीर्थ व्रत कर्म आचारा, अटकावें मग में।
जब तक गुरु मिलें नहीं पूरे, पड़े रहोगे अघ में।

अन्घ कहते हैं अज्ञान को। अब सवाल यह पैदा होता है कि हर एक फ़िरका ये कहता है कि मेरा सत्तगुरु पूरा है, जहां भी जाओ यही कहेंगे हमारा गुरु पूरा है, जो उठता है कहता है 'मैं पूरा, मैं पूरा' मैं इस बात को नहीं मानता। सत्तगुरु नाम है सच्चे ज्ञान का। जहां से भी जिस को सच्चा ज्ञान मिल जाये उसके लिए वो ही सत्तगुरु है। बस, सत्तगुरु के माथे पर तो लिखा नहीं। सत्तगुरु का अर्थ है सच्चे ज्ञान का। जहां से भी तुम्हें शान्ति मिलती है सच्चा ज्ञान मिलता है वहां से ले लो। पन्थ वालों ने अपना-2 पन्थ चलाना था इस लिए अलग-2 नाम

से चला गये। ये सब दुनिया के सम्प्रदाय जितने हैं सब अपने-2 मतलब के झमेले के सिवाय कुछ नहीं। मैं अब पछताता हूं जो मैं पन्थ में आया। क्या रखा हैं पन्थ में ? रोचक और भयानक बातें बना कर लोगों को फंसाया और झूठे दिलासे देने लगें। इस समय का गुरुवाद ठगवाद है, आज कल हम गुरुओं ने दस-दस साल के बच्चों को नाम देना शुरू कर दिया। बच्चों का और नाम, जवानों का और नाम, बूढ़ों का और नाम, औरतों के लिए और नाम। सब के लिए एक नाम नहीं है। प्रत्येक श्रेणी के लिए अलग-अगल काम, अलग-अलग नाम। तो दाता दयाल फ़रमाते हैं कि जब तक सन्त मिले नहीं पूरे। अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि क्या तुझे सन्त मिले थे ? हां, मिले थे। जब उन्होंने देखा कि बात मेरी समझ में नहीं आती तो मुझे कहा करते थे कि तुझ में 99 दोष हो सकते हैंमगर तू एक सत्य-प्रिय इन्सान है। मेरी आज्ञा मान ? तू भी निकल जायेगा शायद औरों को भी निकाल ले जायेगा, गुरु मैं नहीं हूं। यह काम जो मुझ को दिया गया था रे ही कल्याण के लिए दिया गया था। आप

सेवा के कारण मेरा कल्याण हो गया। मेरे भ्रम जाते रहे। मेरी शंकाएँ जाती रहीं। मुझे असलीयत का पता लग गया कि भाई, मैं तो कहीं जाता नहीं यह जो कुछ है लोगों की सेवा का अपना विश्वास है। कोई गुरु किसी के अन्तर नहीं जाता। तुम इससे यह सीखो कि एक जगह विश्वास रखो, तुम्हारे सब काम बन जायेंगे। तुम को जो कुछ मिलना है तुम्हारी मन की शक्ति के कारण मिलना है। तुम्हारी प्रवल चाह के हिसाब से मिलता है।

नाम सुधा रस कभी न पावो भरमे योनी खग में।

वो यह कहते हैं। मैं वो आदमी हूं जिसे दाता-दयाल ने कहा था :—

कभी न मानना मेरे बैना, जब लग ना देखो अपने नैना।

मुझे यह शिक्षा मिली है। दाता ने कहा था मेरी जवान पर कभी विश्वास न करना, जब तक तुम आप देख न लो। तो मैंने देख लिया जो सत्तगुरु लोगों के अन्दर प्रकट होता हैं उन के काम करता है, उनका अपना विश्वास है। दुनिया ने गुरु को नहीं समझा। उसके शरीर को पूजते रहे। गुरु तो आदमी का नाम ही नहीं है, गुरु तो ज्ञान का नाम है। इस

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

बात को कोई महात्मा नहीं बताता, क्योंकि मैंने इस बात को जानने के लिए बहुत तकलीफ उठाई है और प्रण किया था अपना अनुभव कह जाऊंगा,मैं अपना कर्म भोगता हूं। आप लोगों पर कोई एहसान नहीं करता बल्कि तुम्हारा एसाहन मानता हूं कि आप मेरे पास आ जाते हैं और मुझे मेरे कर्म काटने का अवसर मिल जाता है

अगर कोई आदमी दुनिया से पार जाना चाहता है तो नूर का साधन करे ताकि मरते समय तुम्हारे सामने प्रकाश आ जायें और शब्द । तो प्रकाश को पृथ्वी नहीं खींच सकती। जब हमारे यहां आदमी मरता है, तो 10 दिन तक दीपक या ज्योति जलाते हैं क्यों कि मरने वाले ने पहले ज्ञान या गायत्री का नाम लिया हुआ होता है, वो उस प्रकाश को देख के अपने आप को संभाल कर प्रकाश में लग जाये। इस लिए प्रकाश रखा है। ये है सच्ची बात। मरने वाले का सम्बन्ध और प्रेम गुरु के ज्ञान से होना चाहिए। जो गुरु ने बात बताई है उसको मानो। हां,जब तक बच्चों का सा प्रेम है तब तक और बात है। छोटे बच्चे होते हैं, उनकी तो बुद्धि होती नहीं वे, जो कुछ समझते हैं मां ही है। वे दौड़ कर मां के पीछे

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

जाते हैं। ये बचपन की अवस्था एक और बात है यह मेरी समझमें आया है। जब तक प्रकाश और शब्द नहीं खुलता बाहर के गुरु को प्रकाश स्वरूप और शब्द स्वरूप मानो और मालिके कुल अर्थात् पूर्ण परम तत्त्व का रूप अकाल पुरुष समझो। कबीर साहिब कहते हैं :—

गुरु को मानुष जानते, ते नर कहिये अन्ध,
दुःखी हों संसार में, आगे जम का फन्द।

दुनिया पाखण्ड और धोखे का जाल है। मैंने यह काम अपने जैसे इन गृहस्थियों को लुटने से बचाने के लिए किया है। ताकि ये लूटें न जायें, मगर मेरे पास सच्चाई के लिए तो कोई आता नहीं। यह सन्तों का मार्ग केवल उनके लिए है जो मन के हाथों दुःखी हैं और सच्चाई चाहते हैं, इस में पहली बात तो यह है। कबीर साहिब ने साफ कह दिया है :—

जहां नाम तहां काम नहीं, जहां काम नहीं नाम,
रवि रजनी दोनों ना मिलें, एक ठाँव एक जाम।

ज्यादा विषय मत भोगो। अपने बृह्मचर्य को बिना आवश्कता के मत नष्ट करो। जिन आदमियों के ब्रह्मचर्य अधिक गिरते हैं, या स्वप्न दोष होते हैं, उन के मस्तिष्क में तरह-तरह के ख्यालात उठते हैं। उनके मस्तिष्क ठीक नहीं रहते खराब होजाते हैं। जो

आदमी अधिक विषय भोगता है उसको शान्ति नहीं मिल सकती। किसी को क्या कहूं मुझे नहीं मिली थी। विषयी आदमी को शान्ति हरगिज़ नहीं मिल सकती। और विषयी ही अधिकतर गुरुमत की ओर या परमात्मा की ओर या भक्ति की ओर चलते हैं, क्योंकि उन के अन्दर कमज़ोरी होती है। स्वाभाविक ही कमज़ोरी को पूरा करने के लिए आदमी सहारा चाहता है। यह बिलकुल सच्ची बात है। दूसरे ये है कि जिनको इस बात का विश्वास है कि हम ने यहां नहीं रहना है। कोई 10 साल जीया कोई पचास साल जीया, ये दुनिया फानी है। अन्त एक दिन हम ने चले जाना है, यह सन्तमत उनके लिए है।

शेष रह गया दुनिया का काम, हम को जो कुछ मिलता है, हमारे किये हुए कर्म हैं। इसका सन्तमत से कोई सम्बन्ध नहीं है, ये केवल ख्याल की ताक़त से प्राप्त होगा। अपना ख्याल ठीक रखो और ठीक करो। सन्त कलियुग में सच्चाई को ब्यान करने के लिए प्रकट हुए ताकि तुम को सच्चाई का

पता लग जावे और तुम अपने ख्याल को ठीक रखो, तुम्हारे ख्याल में बड़ी शक्ति है। कोई गुरु, कोई महात्मा, कोई ईश्वर, कोई परमेश्वर, कोई खुदा किसी को कुछ नहीं दे सकता। जो कुछ तुम को मिलेगा वो तुम्हारे अपने किये हुए कर्मों का फल मिलेगा, जो तुम ने किये हुए हैं। कुछ पिछले जन्म के कुछ इस जन्म के, उसके अनुसार आप को दु:ख-सुख, नेकी-बदी, गरीबी-अमीरी मिलेगी। जो दुनिया के लिए सन्तों के पास जाते हैं उनका विश्वास एक दिन टूट जाता है क्योंकि वह असलीयत के लिए सन्तों के पास नहीं गये। प्रत्येक आदमी यहां अपना कर्म भोगता है। पुरुष-स्त्री अपना-अपना कर्म भोगोंगे, भाई अपना कर्म भोगेगा, ये ख्याल रखना कि सारे ही सम्बन्धियों के साथ बन जाये, यह नहीं होता। तुम्हारा कर्म तुम्हारे साथ, दूसरे का कर्म दूसरे के साथ। ये मेरी समझ में आया है। मैं यह कहता हूं। आपत्तियां आती हैं, सब पर आती हैं। पिछले जन्म के कर्म होते हैं। कइयों को श्रवण जैसा पुत्र मिल जाता है, कइयों के पुत्र

शत्रु बन के आते हैं। बहू आती है भाग्यवती होती है, घर हरा-भरा हो जाता है। कई बच्चे ऐसी दुर्भाग्य घड़ी में पैदा होते हैं, सारे कुल को मलियामेट कर देते हैं। कइयों को नेक औरतें मिल जाती हैं, कइयों को बुरी मिलती हैं। कई औरतें नेक होती हैं उनको पति दु:ख देने वाले मिल जाते हैं। यह कर्म का चक्कर है। सब अपना-अपना कर्म भोगते हैं। तो सन्तों के इस ख्याल से कि कर्म के चक्कर से जीव निकल जायें उनको यह हिदायत की है कि मन के खेलों से वैराग्य प्राप्त करो। यथा-योग्य व्यवहार करो मगर फँसो नहीं। दूसरा यह है कि किसी दुखिये की सहायता किया करो।

देखो, तुम्हें बताता हूं, यदि तुम दुनिया में सुखी रहना चाहते हो तो किसी दुखिये की सहायता किया करो। पहले अपने बूढ़े माता-पिता की सेवा करो, गुरु पीछे माता-पिता पहले मैं तो यह जानता हूं। मैंने दो साल पिता की बड़ी सेवा की है उनका वचन है, 'बच्चा सुखी रहेगा' मैं सुखी हूं। बाप के पास अगर पैसा है तो फिर तो लड़के, बहुएं भी सेवा करते हैं। बहादुरी

उस लड़के और उस बहू की है कि बाप के पास कुछ भी न हो फिर वो सेवा करते हैं वो पुण्य है। फिर देखो ! फल मिलता है कि नहीं मिलता, मैंने आज़माया हुआ है। मैंने बड़ी सेवा की। लोग तो ज़ायदाद के लिए सेवा करते हैं। मेरा बाप तो सिपाही था उसके पास से क्या लेना था। उनका सच्चे दिल से आशीर्वाद था 'फ़कीर, तूने मेरी बड़ी सेवा की है मालिक तुझ को सुखी रखे।' एक स्त्री, मास्टर मोहन लाल के घर में मेरे पास आई, उसके बच्चा नहीं था। कहने लगी—महाराज मेरे सन्तान नहीं है। मैंने कहा—तेरी सास है ? उसने कहा—हां, है। मैंने कहा-उसकी सेवा किया कर तेरे लड़का हो जायेगा। वह कहने लगी वो तो मुझे गालियां निकालती है, मेरी उसकी बनती नहीं। मैंने कहा—वो तुम को गाली निकाले कुछ भी करे अपनी नीयत को साफ रख कर उसकी सेवा किया करो। तीन साल के बाद लड़का लेकर मेरे पास आई। किसी दु:खिये की सहायता किया करो, मैं नहीं कहता मेरी सहायता करो। मन्दिर में दो। मैं हमेशा देता रहता हूं। अब मैं अमीरी और बादशाही भोगता हूं,। एक जालन्धर के जिलेका वैद्य

था, दस बारह साल हुए मेरे पास आया, कहने लगा—बाबा जी, बारह साल हो गये बच्चा नहीं है। मैंने कहा—क्या काम करते हो? वैद्य हूं। मैंने कहा—क्या तुम गांव में वैद्य हो? उस ने कहा, हां। तो जो समय तुम्हारा दिन का है उसके पश्चात् यदि कोई आदमी शहर का अमीर या ग़रीब तुम्हारे पास आये तुरन्त उसके घर में, चले जाओ फीस मत लो, उसका इलाज मुफत करो, तुम्हारे लड़का हो जायेगा और हो गया, डेढ़ साल के बाद लड़के को मेरे पास ले आया। मुझे तो याद नहीं था। मैंने उसका नाम फ़कीर चन्द रखा। तो मैं यह कहता हूं "देने वाले की रद बला"

हक व हलाल की कमाई करो दूसरे का हक मत खाओ। ये मेरा अपना अनुभव है, मैंने तालीम को बिलकुल साफ कर दिया, दुनिया में जीने का राज़ बता दिया। अमीरी-गरीबी सिर पर आती है तो क्या हुआ। शर्म कैसी। दिन आते हैं और चले जाते हैं। अमीरी भी मैंने देखी, गरीबी भी मैंने देखी। मैंने पांच-पांच सौ रुपये के सूट भी पहने और छः-छः महीने

चने भी खा कर गुज़ारा किया परन्तु कभी मुझे दु:ख नहीं हुआ। आय से अधिक व्यय मत करो, हमेशा कुछ बचाओ, लोक-लाज को छोड़ो । लोक-लाज में आकर खर्च करना बड़ा भारी पाप है। दु:ख का कारण हमारा यही है और कुछ नहीं। हमेशा याद रखो कि घरों में पति, पत्नी का आपस में प्रेम रहे। मैं जिम्मेवारी को अनुभव करता हूं। मैं शुभ भावना देता हूं, जो आदमी विश्वास करते हैं उनके काम हो जाते हैं। तो मुझे विश्वास हो गया कि जो कुछ है, ऐ इन्सान ! तेरे विश्वास में है। हमेशा आशा-वादी रहो, मालिक जो कुछ करता है उसमें कुछ न कुछ भलाई है। हमको पता नहीं है। विश्वास और ज्ञान में शान्ति है। एक बात और बता देता हूं। बाणी में आया है :—

राधास्वामी गाय कर, मन सुफल कर ले।
यही नाम निज नाम है, मन अपने घर ले।

दुनिया ने सन्तों की बाणी को समझा नहीं। निज नाम के अर्थ क्या हैं ? निज नाम के अर्थ हैं 'मेरा जो

असली नाम है वो प्रदान करो 'निज का अर्थ है अपना, यह ज्ञान हो जाना कि मैं वास्तव में कौन हूं । लोगों ने समझा नहीं, समझाने वालों ने समझाया नहीं । वो तो यह चाहते रहें कि हर महीने आता रहे, रुपया चढ़ाता रहे और फिर समझने वाला भी कोई ही होता है ।

सब को राधास्वामी ।

दयाल की दया

हुजूर दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज ने एक शब्द में परम दयाल फ़कीर चन्द जी महाराज को लिखा था :—

तू तो आया नर देही में, धर फ़कीर का भेसा।
दु:खी जीव को अंग लगा कर, ले जा गुरु के देसा।
तीन ताप से जीव दु:खी हैं, निबल अबल अज्ञानी,
तेरा काम दया का भाई, नाम दान दे दानी।

मैंने लगभग 14 वर्ष मानवता मन्दिर होशियारपुर में रहकर हजूर परम सन्त, परम दयाल फ़कीर चन्द महाराज जी की संगत की है और इस पिछली आयु के दिन काटने के लिए जो उनकी आज्ञा थी वो काम कर रहा हूं। मैं देखा करता था कि उनके पास तरह-तरह के दु:खी प्राणी आया करते थे और

बड़ी श्रद्धा तथा विश्वास के साथ अपने दुःखों का निवारण करने के लिए हजूर के चरणों में प्रार्थना किया करते थे। जीवों के इन तापों को सुनकर हजूर का मन दर्द से भर जाता था। उन तापों को दूर करने के लिए प्रेम और स्नेह के साथ शुभ भावना दिया करते थे और वे दुःखी प्राणी शान्ति को प्राप्त करते थे।

अब उनके भौतिक शरीर छूटने के बाद मुझे विश्वास है कि आगे के लिए भी उनकी यह दया की धार काम करती रहेगी और दुःखी प्राणियों के ताप हरती रहेगी तथा दुःखियों की इच्छाएं पूर्ण होती रहेंगी।

आज मुझे हजूर मानव दयाल ईश्वर चन्द्र शर्मा जी महाराज का पत्र अमेरिका से मिला जिसमें उन्होंने अपनी इस समय की अवस्था लिखी है। इसके पढ़ने के उपरान्त हृदय गद्-गद हो गया और मेरा जो विश्वास था उसके पूर्ण होने की आशा बंध गई। विश्वास हो गया कि इनकी दयालुता

आगे भी काम करती रहेगी चाहे वो किसी भी रूप में काम करे। पहले वो परम दयाल थी और अब मानव दयाल के रूप में काम करेगी।

उनके पत्र की नक़ल दी जाती है :—-

3643 West 39th Street,
Cleveland,Ohio. 44109
U.S.A. October 28th 1981.

ऐ मेरी अपनी ही आत्मा श्री भगत जी के रूप में,

सप्रेम राधास्वामी !

आपका 12 अक्तूवर का प्रेम भरा पत्र मेरे सामने है, जिसके लिए मैं आपका आभारी हूं। मैं आपकी भावनाओं का सत्कार करता हूं। मुझे देहली से कोई भी निमन्त्रण पत्र नहीं आया। मैं प्रसन्न हूं कि आपको वहां आदर दिया गया। यह संसार एक प्रकार की नाट्यशाला है तथा हम सब मौज़ के आधीन नाटकके पात्रों की तरह खेल कर रहे हैं यदि हमें यह ज्ञान हो जाये कि हम सदैव मौज़ के आधीन हैं, जो हमें हर स्थान और हर समय प्रेरित करती है तो हम चिन्ता रहित हो जायेंगे तथा अच्छे और बुरे, खुशी ओर ग़मी, मान, अपमान, दु:ख व सुख के वारे में चिन्ता करना छोड़ देंगे। खुशी और ग़मी, लाभ और हानि, प्रशंसा तथा बदनामी ये

सब परस्पर सम्बन्धित हैं और हमारे प्रारब्धकर्मों पर आधारित हैं तथा इनको प्रसन्नता पूर्वक सहना होगा। मैं सच्चे दिल से आप की भावआओं से सहमत हूं। आपके पहले पत्र द्वारा याद आया कि सन्तों, दाता दयाल जी महाराज और पिता जी महाराज के काम की जिम्मेवारी दूसरों की अपेक्षा हम पर अधिक है। यद्यपि मैंने दो तारों के द्वारा (जो 1973, 1976 में पूज्य पिता जी के आदेश पर भेजी गई थीं) शपथ ग्रहण की थी कि मैं उनकी तरह ईमानदारी से सम्पूर्ण संसार में सत्यता फैलाऊंगा, फिर भी मुझे यह आशा नहीं थी कि पिता जी इतनी जल्दी हमको छोड़ कर परमधाम चले जायेंगे। मेरा विचार है कि उन्होंने अमेरिका में आकर अपना विचार बदल लिया। जब मैं स्वयं आपके पास आऊंगा तो इसके बारे में विस्तार पूर्वक परस्पर बात करेंगे। इस में किंचिन्मात्र भी सन्देह नहीं है कि मैं पूर्ण रूप से परमतत्त्व में मिल गया हूं। ऐसा मैं पहले कभी नहीं था। अब मैं उस परमतत्त्व में एक हो जाता हूं और चलते-फिरते, बातचीत करते हुए संसार को भूल जाता हूं। पिता जी द्वारा लिखा या बोला

प्रत्येक शब्द मेरे हृदय में हर क्षण विद्यमान रहता है। बचपन से लेकर आज तक मेरे हृदय में किसी मनुष्य के विरुद्ध बुरी भावना नहीं आई । मैंने युवावस्था में ही गायत्री मन्त्र के सुमिरन से प्रकाश का साक्षात्कार किया और मुझे अब पता चला कि ऐसा क्यों हुआ था। पिता जी ने कहा है कि जिस लक्ष्य पर राधास्वामी गुरु का नाम-दान ले जाता है, गायत्री मन्त्र भी उसी लक्ष्य पर ले जाता है। मैंने किसी को भी अपना गुरु नहीं माना था। 1959 ई० में पहली बार स्वप्न में पिता जी के दर्शन हुए । इस घटना के बाद मैं प्रकाश तक पहुंच गया और ध्यान के बाद भी मैं वहां घण्टों तक ठहरा रहा । और जब 1965 ई० के सत्संग पर पिता जी ने मेरे मस्तक पर हाथ रख कर नाम-दान की रीति पूरी की उस समय मैं सोहंग मन्त्र का जाप करते हुए प्रतिदिन प्रकाश में जाता था। जब तक कि मैं अपना कर्म भोग पूरा नहीं कर लेता, पिता जी ने मुझे वर्षों तक सोहंग की अवस्था में ठहरने की आज्ञा दी । लेकिन जब वह 1980 ई० में मेरे घर क्लीवलैंड में आये, उन्होंने मुझे ऊपर जाने की आज्ञा दी। तब से मुझ पर

मस्ती की अवस्था जो अति आनन्ददायक है, तारी होती रहती है, तथा मैं धन्य हो गया। मई 1980 ई० में मेरी साधना पूर्ण हो गई। इस लिए अब मैंने नीचे की अवस्थाओं को त्याग दिया, इस लिए मेरे Philosophy के प्राध्यापक होने के नाते पढ़ाने, बोलने तथा लिखने के काम विना किसी प्रयास के अपने आप जैसे होने चाहिएं हो रहे हैं। मैंने अभी ईश्वर (कर्त्ता पुरुष) का त्याग नहीं किया है। मैं पिता जी के दिव्य रूप की उपस्थिति अपने शरीर और ख्याल में हर समय अनुभव करता हूं। किसी समय मैं सचमुच अपने होश (हैपने) को खो जाता हूं और जब जाग्रत अवस्था में आता हूं तो ऐसा लगता है कि मेरी सुरत मेरे शरीर, मन और आत्मा को छोड़ चुकी है। लेकिन यह बहुत कम होता है। मैं दो सप्ताह हुए श्री नन्द सेहरा जी के घर सत्संग देने कैनेडा गया था, क्योंकि पिता जी ने उनके घर शारीरिक रूप में आने से पहले परमधाम जाने का निश्चय कर लिया था। वहां पर जो सत्संग मैंने अपनी भाषा और विचारों के अनुसार दिये वो

इतनी आनन्दावस्था के थे कि मुझे इस बात का ज्ञान नहीं कि मैंने क्या बोला और क्या लिखा। मैं यह सत्संग आपको प्रकाशन के लिए भेजूंगा। मैं बताना चाहता हूं कि इन सत्संगों का मेरे ऊपर इतना गहरा प्रभाव था कि कई घण्टों तक मेरी सुरत शरीर में नहीं थी। मैं ऐसा क्यों कहता हूं ? श्री नन्द सेहरा का भाई, उसका लड़का, मेरी धर्म-पत्नी भाग एक बड़ी कार में उनके work shop में गये जिसके लिए पिता जी ने पिछले वर्ष शुभ भावना दी थी। जब हम कार में बैठे तो मुझे यह पता नहीं था कि भाग कार में बैठी थी कि नहीं। मैं आनन्दावस्था में इतना लीन था कि मैं अपनी धर्म-पत्नी को अपने साथ ले जाना भूल गया। यह एक उदाहरण है। भाग ने कैनेडा में हंसते हुए शिकायत की कि मैं उस को भूल गया था। वह मेरे साथ सहमत है तथा सदैव सहज समाधि में रहता है क्यों-कि पिता जी ने उसको शरीर छोड़ने से पहले आशीर्वाद दिया था।

यदि आप चाहें तो इसे मानव मन्दिर में प्रकाशित कर दें।

सम्पादक

आत्मानुभूति

लेखक—दुर्गा दास 'चमन'

7. एक दिन कुटिया पर ध्यान में लेटे हुए उस अपार शक्ति ने समझाया। सामने गुरु नानक देव जी का चित्र था। साथ ही ज्ञान दाता हजूर परम दयाल जी के चित्र थे। समझाया कि "बिना साकार के ज्ञान नहीं मिलता। साकार की साधना सांसारिक धन्धों के लिए आवश्यक है। संसार में अपने विचार की पूर्णता के लिए साकार का ध्यान आवश्यक है। किन्तु जब तक यह प्रबल वासना में रहेगा, निराकार की ओर दृष्टि नहीं जायेगी। हां, निष्काम कर्म निराकार की आंख खोल देगा। पूर्ण रूप से निष्काम होने पर सत्तपुरुष चेतन स्वरूप घट में ही प्रकट हो कर बुद्धि प्रदान कर के गुरु का काम करेगा और तीनों गुणों का पूरा-2 भेद मिल जायेगा। इस प्रकार समदृष्टि वाला हो कर सहजावस्था में चला जायेगा।

8. समाधि दो प्रकार की है, जड़ व चेतन। जड़ समाधि वह है जो शरीरादि को भूल कर केवल

एक में खो जाना है। पूर्ण चेतनता की समाधि वह है कि अन्तर में प्रकाश आये चाहे न आये भी किन्तु सुरत अपनी पूर्ण चेतनता में खिंची रहे। उसे शरीर का तिनका गिरने का भी बोध होता रहे, किन्तु कशिश अर्थात् खिचाव चेतनता का ही रहे। यह सब चेतनता का खेल समझा जाये। चित्त पर उस का कोई भी प्रभाव न पड़े।

9. आसुरी सम्पदाएं भी चेतन का अपना ही रूप हैं। जब हम अज्ञानतावश उन्हें आसुरी (Evil Force) कहते हैं तो उन का प्रभाव हमारे ऊपर पड़ेगा। 30-4-80 को पूर्ण ने इस के विषय में कुछ नोट करवाया। रात को अर्द्ध-निद्रावस्था में उन का आक्रमण हुआ, पता चला कि स्वप्न देखा जा रहा है। शाम को घर में बिगाड़ हुआ, प्रात: विषय-विकार सामने आया। अत: किसी भी सम्पदा को केवल उसी का रूप माना जाये तो वह कष्ट नहीं दे पाती।

10. एक बरगद के वृक्ष के नीचे बैठा था। सामने पहाड़ी पर बल खाती हुई सड़क जा रही है। काफ़ी

आगे बिल्कुल सीधी हो गई है। ज्ञान दिया गया कि मानव का अन्तर व बाहिर का जीवन भी ऐसा ही है। बिना देहधारी गुरु के सड़क की पगडंडियों की भान्ति उलझना पड़ता है, पूर्ण पुरुष मिल जाये तो उन के अनुभवरूपी ज्ञान द्वारा सीधी सड़क की भान्ति मार्ग सुगम व सीधा हो जाता है, भटकना नहीं पड़ता। देहधारी गुरु की यही महानता है।

11. जहां बैठा था वहां पास ही गन्दगी थी। मन ने बुरा माना, उसे जन्म से ही बुराई के संस्कार जो मिले हैं। चेतन ने कहा ऐसा क्यों ? यह सब इसी शरीर से पैदा हुआ पदार्थ है। जब शरीर से घृणा नहीं तो इस से क्यों ? समता का जीवन चेतनता की महिमा है।

नोट :– इस की पहली किश्त छप चुकी है। यह दूसरी है। शेष अगले अंकों में छपेगी।

परम दयाल जी महाराज को श्रद्धाञ्जलि ।

दास 1972 में हजूरी चरणों में आया। उससे पहले भी कई सन्त महात्माओं के श्री चरणों में हो आया था। हजूर ने नाम-दान की महिमा बताई और नाम भी दिया। उसके उपरान्त उन के चरणों में भी जाता रहा और पत्रव्यवहार भी चलता रहा। इस समय परम दयाल जी के 136 पत्र मेरे पास सुरक्षित हैं, वह पूर्ण ज्ञान का भण्डार हैं। वह सच्चे पुरुष व पूर्ण ज्ञानदाता थे। उन की निम्न-लिखित बातें :—

1. जब तक व्यावहारिक जीवन में सत्यता न आये सन्तोष नहीं मिल सकता और न ही अन्तर की कमाई हो सकती है।
2. अधिक विषय भोगने वाला अशान्त हो जाता है। जोवन दु:खी हो कर काटता है।

3. वह ज़ोर दे कर कहते थे, "मैं किसी के अन्तर नहीं जाता, मानव का अपना विश्वास ही कार्य करता है।"

4. अध्यात्म मार्ग में उन की सब से बड़ो खोज यह है कि "मैं उस वस्तु की तलाश करता हूं जो प्रकाश में रहती हुई प्रकाश को देखती है व शब्द को सुनती है" वही ज़ात या Self है। यही द्रष्टापन की भावना है। यह अभ्यास के वाद जाग्रत अवस्था में रहनी चाहिए। जो तीनों अवस्थाओं (जाग्रत, स्वप्न व सुषुप्ति) में द्रष्टापन को अपनाता है वही मुक्त है।

हज़ूर ने दास को सत्संग करने व नाम-दान देने की आज्ञा दी है। इस काम से ये सब बातें सत्य प्रमाणित हुई हैं। मालिक योग्यता दे कि उन का कार्य जीवन में पूरा कर सकूं। हज़ूर की बातें सदा हम अज्ञानियों का मार्ग दर्शन करती रहेंगी। मेरे लिए हज़ूर दूर नहीं, सदा साथ हैं व साथ रहेंगे।

दुर्गा दास 'चमन'

श्रीमान् मास्टर कृष्ण गोपाल जी, निवासी पंडोरी झाभा, जिला होशियारपुर की ओर से हजूर परम दयाल जी महाराज को

श्रद्धाञ्जलि

कहूं तुझ को मालिक, या रहबर पुकारूं,
वाहे गुरु समझूं या अल्ला मानूं।

राम रहीम बुद्ध, ईसा भी तू है,
मुहम्मद भी तू है, नानक भी तू है।

कई जन्म दुनिया में आता रहा तू,
भ्रम और शिकवे मिटाता रहा तू।

तू गोबिन्द बन कर सिखाता था लड़ना,
कृष्ण बन कर तू फिर सिखाता था मरना।

दुनिया में सब का मददगार है तू,
फ़हम रोशनी का चमत्कार है तू।

दु:खी जो गया हो सुखी लौट आया,
कई भूले भटकों को है राह दिखाया।

मुजस्सम सच्चाई की तस्वीर है तू,
झंझट मिटाने की शमशीर है तू ।
'कृष्ण' के लिए तू ही सब कुछ है भगवान्,
फरहाद को शीरीं जू तासीर है तू ।
तेरे दर गदा जो भी आता रहा है,
शहनशाह तू उसको बनाता रहा है ।
झोली भरी खैरे पाकीरगी से,
तू सीरत से उसको सजाता रहा है ।
नज़रों से नज़रें मिलाये तू जिससे,
करे गुफ्तगू फिर वो दुनिया में किससे ।
तीनों जहानों को कह दी अलविदा,
'कृष्ण' फिर न आता न जाता रहा है ।
किया एहले दुनिया पे एहसान तूने,
बनाये हैं शैतान से इन्सान तूने ।
तफरके मजाहिब खत्म कर दिखाये,
बनाये समझदार इन्सान तूने ।
दिला कर के छुटकारा, गौर व फिकर से,
बनाये गुलिस्तां बियाबां से तूने ।
जहन्नुम को है तूने जन्नत बनाया,
'कृष्ण' धारा अवतार भगवान् तूने ।

परम दयाल जी महाराज के पिट्स-बर्ग मर्सी अस्पताल के सम्बन्ध में आया पत्र ।

भाग नं० 2

लेखक :— डा० हंसराज जी घई

पिता जी मर्सी अस्पताल में कमरा नं० 1705 में तिथि 13-8-81 के प्रातः चार बजे तक रहें। मुझे हज़ूर ने 12-8-81 की रात को ही डा० रामदेव राव के भाई कृष्ण देव के साथ घर भेज दिया था। डा० रामदेव राव तथा उनके पिता श्री राजेश्वर राव उस रात पिता जी के पास ठहरे थे। डा० राव ने प्रातः ही मुझे टैलीफोन से बता दिया था कि पिता जी को Intensive Care Room में भेज दिया गया है। उस टैलीफोन के आते ही कृष्ण देव आये तथा मुझे अस्पताल ले गये और हम सीधे उस कमरे में गये जहां पिता जी को रखा गया था। पिता जी बेहोशी

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

की हालत में थे। लेकिन जब मैंने उनको होश में लाने के लिए पुकारा कि पिता जी, मैं आ गया हूं और मैं रात को अच्छी तरह सो गया था तो उन्होंने मेरी ओर सिर घुमा कर देखा और फिर आंखें बन्द करके समाधि में चले गये। यह मैं इस लिए कहता हूं कि मुझे पिता जी के समाधि की हालत में दर्शन करने का काफ़ी अनुभव था और फिर जब मैंने उनके पैर के अंगूठों को मालिश कर के तथा दबा कर होश में लाने का प्रयत्न किया तो हजूर महाराज ने अपना पांव खींच लिया। इस से साफ प्रकट होता है कि कम से कम वह खामोशी में नहीं थे। हां, आवाज़ देने पर हजूर बोलते नहीं थे। मैंने एक पत्र, श्री ए.एस. मुनि को जो कि कलकत्ता में रिटायर होने के बाद टैलीथापिट्स का काम करते हैं तथा दूर से ही बैठे रोगियों का इलाज करते हैं, पहले ही लिखा था जिसके उत्तर में मुझे निराशा ही मिली थी। उन्होंने Radiation से इलाज शुरू करने की परामर्श दे दी थी। देहली में भी एक डाक्टर यही काम करते हैं। उनकी मारफत (द्वारा) भी इलाज करने के लिए मैंने श्री नन्द लाल

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

जी को अमेरिका से टैलीफोन पर विनती की थी। उन्होंने मेरे छोटे भाई ब्रजलाल को वहां भेजा। लेकिन हिन्दुस्तान आकर मालूम हुआ कि डाक्टर ने भी कोई आशा नहीं दिखाई। इसके अतिरिक्त देहली से भी नन्द लाल जी ने पिता जी के सिर पर बादाम रोगन की मालिश करने के लिए भी कहा। अस्पताल में कोई ऐसा बाहरी इलाज करने की स्वीकृति नहीं थी। इसलिए Psyclince साधन इलाज अर्थात् पिता जी के सिर को विचार में लाकर ख्याली तौर पर मालिश भी की गई। मेरे दिल में यह भी विचार आया तथा जैसा कि पिता जी ने किसी समस्या को हल करने का साधन बताया था, उसे प्रयोग में लाने पर उत्तर मिला कि इससे भी पिता जी बेचैन होते हैं, छोड़ दिया। होशियारपुर से जौहड़ा साहिब ने टैलीफोन से बताया कि डा० सरदारी लाल ने दो होम्योपैथिक दवाइयां देने के लिए कहा है। वह दवाइयां Philadilphia फिलिडलफिया से मंगवा कर दी गई। मैंने भी एक Table Fan को Broad Casting Machine में Improve करके लहरों का और दवाइयों का Radiation दिया। लेकिन क्यों-

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

कि पिता जी,का अपना संकल्प भी अमेरिका में चोला छोडने का था अत: कोई लाभ नहीं हुआ बल्कि मैंने स्वयं भी पिता जी से प्रार्थना की कि हज़ूर तो जरूर शरणागतम् अर्थात् उस मालिक पर सब कुछ छोड़ते हैं, लेकिन आप परम दयाल हैं, आप हमारे लिए ही अपना रोग दूर करके हमारी परेशानी दूर करें। लेकिन उस का उत्तर पिता जी ने यही दिया कि His will is Supreme। बल्कि मैंने एक दिन पिता जी की चारपाई के इर्द-गिर्द चक्कर लगा कर उस मालिक से प्रार्थना की कि ऐ मालिक ! यह रोग मुझे दे दो लेकिन पिता जी ने भांपते हुए कहा— घई ! यह क्या करते हो ? मैं अपने कर्म स्वयं भोग लूंगा, बल्कि विश्वामित्र जी का तार भी ऐसा ही आया था, लेकिन उस समय पिता जी बेहोशी में थे। हिन्दुस्तान से, अमेरिका से, इंग्लैंड से टैलीफोन, तारें और पत्र आते थे । उन सब में यही लिखा था कि वो हज़ूर के स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना करते हैं। लेकिन पिता जी के फरमाने के अनुसार ये सब प्रार्थनाएं जहां वह रहते हैं पहुंचती ही नहीं। शर्मा जी भी एक रात हमारे साथ अस्पताल में रहे।

वह भी सारी रात जागते रहे तथा प्रार्थना करते रहे, लेकिन मालिक को कुछ और ही स्वीकार था। शर्मा जी हर दूसरे दिन आते थे, टैलीफोन तो लगभग प्रतिदिन ही आते थे। एक दिन मुझे विचार आया कि पिता जी कहते हैं कि इस संसार को बनाने वाला निर्दयी है कि लोग अपने रिश्तेदारों के मरने पर रोते हैं। क्या सन्त निर्दयी नहीं हैं ? जब वो चोला छोड़ते हैं तो लाखों को रोता छोड़ जाते हैं। लेकिन पिता जी ने फ़रमाया कि मैंने तो सच्चाई बता दी है और मैं क्या करूँ ! जब पिता जी को दर्द के कारण टीका लगाया जाता था तो उस समय भी बेहोशी में बड़वड़ाते थे तो सत्संग ही करते थे। बीमारी की हालत में भी हज़ूर दूसरों के कष्ट को काफ़ी महसूस करते थे। वही अपनी उदाहरण मैं दे चुका हूं। मुझे कई बार आज्ञा देते थे कि सो जाओ लेकिन मैं कहता था कि हज़ूर मुझे नींद आती ही नहीं। इस पर उन्होंने फरमाया कि राव ! यदि घई को कुछ हो गया तो मैं कहां जाऊंगा। अत: एक नर्स को नौकर रखो। नर्स रख ली गई। फिर भी मुझे नींद नहीं आती थी तो घर भेज दिया।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

एक दिन एक नर्स आई । उसके चेहरे पर बड़ी उदासी थी, उसको कहने लगे-मेरी बेटी ! क्या बात है ? तुम्हारा चेहरा उतरा हुआ है । उसने कहा कि उसके पति की नौकरी छूट गई है और वह अकेली अपने बच्चों को नहीं पाल सकती । पिता जी ने आंखें बन्द करके फ़रमाया कि परसों तुम्हारे पति को पहले से भी अच्छी नौकरी मिल जायेगी । दो दिन के बाद वह स्वयं धन्यवाद करने आई । Prof. Bell का लड़का जिसको युवावस्था में ही आंखें खराब हो रही हैं तथा एक आंख तो बिलकुल बन्द हो गई है, को हज़ूर से प्रशाद दिलाया था तथा मुझे आज्ञा दी कि इस को Lotus Honey प्रयोग करने के लिए कहो ! मैंने भारत आ कर ही उनको शहद भिजवा दिया और Bell का धन्यवाद का पत्र भी आ गया । हज़ूर के चोला छोड़ने के बाद उनके मृतक शरीर को भारत लाने के लिए सब प्रबन्ध डा० रामदेव जी राव ने करवाया । वह प्रशंसा योग्य हैं । उन्होंने जो सेवा व भक्ति भाव पिता जी के लिए दिखाया उसकी उदाहरण संसार में नहीं मिलेगी । अपने रोगियों को देखने के बाद हम लोगों को

अस्पताल ले जाते। जो लोग पिता जी को देखने आते थे उनको हवाई अड्डे से लेकर आना तथा उनको वापिस छोड़ना, विशेष कर सारा दिन अपने दवाईखाने में काम करने के बाद, कितना कठिन काम है। इस पर जो खर्च उन्होंने तथा विश्वामित्र जी महाराज ने किया है इसकी उदाहरण संसार में नहीं मिलती। फिर उन्होंने मेरी जो सेवा की है उसका तो मैं धन्यवाद अदा ही नहीं कर सकता।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

शोक समाचार

हज़ूर दाता दयाल महर्षि शिवब्रत लाल जी महाराज की श्रद्धालु शिष्या तथा आचार्य प्रेमानन्द राय जी महाराज की माता जी श्रीमती भाग्यवती जी, जिसको वे दयाल की माई कहा करते थे, उसका देहान्त 1-11-81 को ग़ाजीपुर जिला बनारस में नब्बे वर्ष की आयु में हो गया, वे अपने विशाल परिबार को छोड़ कर दाता की गोद में चली गई, हमारी दाता से प्रार्थना है कि दाता उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें। हम उनके परिवार से हार्दिक समवेदना प्रकट करते हैं।

Copy of the Letter D/-24-11-81 from SH. GULZARI LAL NANDA Ex-Home Minister, Govt. of India.

My dear Shri Bhagat,

I have seen the volumes of the Manav Mandir issues, after the passing away of the most reverd Param Dayal Fapir Chand ji Maharaj. It is some solace that the spiritual message based on his life, long experience and cxperimentation, will be available to his devoted followers, and other aspirants, through this publication.

while in India, before, his departure for America, he had left no one in doubt that the end to his earthly sojourn was not far away. That the light of his spirit kept shining till the end, is evident from the account of his last days and his own partlng message as recorded in the pages of the Manav Mandir.

The story of his life and ascent was an open book, and the unique candour and persistence with which he unfolded his own revelation will remain an important and fascinating chapter in the spiritual history of India.

The sense of personal loss can not be easily erased from the minds of those who came in contact with him and benefitted from his guidance. Sharing your sorrow and with the kindest Regards

Yours sincerely

Gulzarilal Nanda

हजूर मानव दयाल ईश्वर चन्द्र शर्मा जी महाराज के दौरे का विवरण ।

1. 8-12-81 बम्बई
2. 9, 10-12-81 उदयपुर
3. 11-12-81 जयपुर
4. 12-12-81 आगरा, समय—सायंकाल स्थान—क्लार्क होटल या हॉलिडेइन में
5. 14-12-81 वाराणसी

6. हजूर 15-12-81 को हवाई जहाज़ द्वारा वाराणसी से सायंकाल, 6 बजे देहली पहुंचेंगे और क्लैरिजिज होटल में विश्राम करेंगे। दर्शनाभिलाषी वहां उनके दर्शन कर सकते हैं। 16, 12, 81 को सायंकाल 6 बजे, क्लैरिजिज होटल, नई दिल्ली में विशाल सत्संग होगा।

7. 17-12-81 से 24-12-81 तक हजूर मद्रास और बंगलौर का दौरा करेंगे।

8. 25-12-81 को होशियारपुर पहुंच जायेंगे ।

9. 26-12-81 को जो सज्जन उनसे कोई बातचीत करना चाहें या पूछना चाहें तो उनसे मिल सकते हैं ।

10. 27-12-81 को मानवता मन्दिर होशियारपुर में साप्ताहिक सत्संग देंगे । सत्संग प्रातः काल $8\frac{1}{2}$ बजे प्रारम्भ होगा ।

कर्म भोग या मौज़

परम सन्त, परम दयाल पूर्ण धनी, फ़कीर चन्द जी महाराज के भौतिक शरीर त्याग कर निज धाम सिधारने के पश्चात् "मानव मन्दिर" पत्रिका भविष्य में प्रकाशित होती रहेगी। हजूर संसार के लिए एक ज्ञान का भण्डार छोड़ गये। इस ज्ञान में विशेषता यह है कि वे जीवन भर सार साधन, अभ्यास करके निज अनुभव के आधार पर सन्तमत में जो परिवर्तन लाये वह अपूर्व है।

उनके साहित्य को भी जैसे कि वो अपने जीवन-काल में विना मूल्य भेजा करते थे, उसी प्रकार जनता के हित के लिए अब भी भेजा जाता रहेगा। फ़कीर लाइब्रेरी चैरिटेबल ट्रस्ट होशियारपुर ये दोनों सेवाएं प्रचलित रखेगा और यथाशक्ति उनकी जलाई हुई ज्योति को जलाये रखेगा।

यदि कोई सज्जन मानवता मन्दिर के इस काम को सर्व साधारण के लिए लाभदायक समझता हो और विशेषकर अधिकारी जीवों को शान्ति का मार्ग मिलता हो तो वे जो इच्छा हो, सहायता कर सकते हैं।

—सम्पादक

ਪੰਜਾਬੀ ਕਤਾਬਾਂ ਦੀ ਸੂਚੀ

1. ਪੰਜ ਨਾਮ ਦੀ ਵਿਗਿਆਨਕ ਵਿਆਖਿਆ । 2. ਅਨੁਭਵ ਦਾ ਨਿਚੋੜ ਮਾਨਵਤਾ । 3. ਸਚਾਈ ਦਾ ਨਿਚੋੜ । 4. ਮਾਨਵਤਾ । 5. ਮਾਨਵ ਕਲਿਆਨ । 6. ਸੱਚਾ ਧਰਮ ਮਾਨਵਤਾ । 7. ਨਾਮ ਦਾਨ ।

अंग्रेजी भाषा में साहित्य

1. A Word to Americans. 2. A Word to Canadians.
3. Manavta the true religion.
4. Religious Research. 5. Weight of Soul.
6. Truth Always Wins. 7. Essence of Truth.
8. Science of God Realization.
9. Realization of Reality. 10. JeewanMukti.
11. Art of happy living. 12. Key to Freedom.
13. Broadcast of Reality in America.
14. Yogic Philosophy of Saints,
15. Nam Dan. 16. Autobiography of Faqir.
17 Republic day Message 26-1-81. 18 Radha Swami Dayal's Divine Message on Self Realization.

हिन्दी भाषा में पुस्तकें

1 अनुभवसार । 2 सन्तमत लेखमाला भाग 1
3 सन्तमत लेखमाला भाग 2

—o⁘o—

मानव कल्याण सभा, चण्डीगढ़

मानव कल्याण सभा, चण्डीगढ़ रविवार 20-12-
को श्री गोस्वामी गणेश दत्त भवन मध्यमार्ग सै.
19 A चण्डीगढ़ में सत्संग आयोजित कर रही है, जिस में हज़ूर परम सन्त परम दयाल पं. फकीर चन्द महाराज जी के टेप रिकार्ड किये हुए सत्संग प्ले किये जायेंगे और हज़ूर के आध्यात्मिकता के उत्तराधिकारी होशियारपुर से हज़ूर मुन्शी राम भगत जी महाराज सत्संग करायेंगे।

समय: सुवह 9-00 से 11-00 वजे,
शाम 2-30 से 4-30 वजे तक

हज़ूर मानव दयाल जी महाराज को भी पधारने की प्रार्थना की गई है। उनके सत्संग देने की भी सम्भावना है।

—मन्त्री